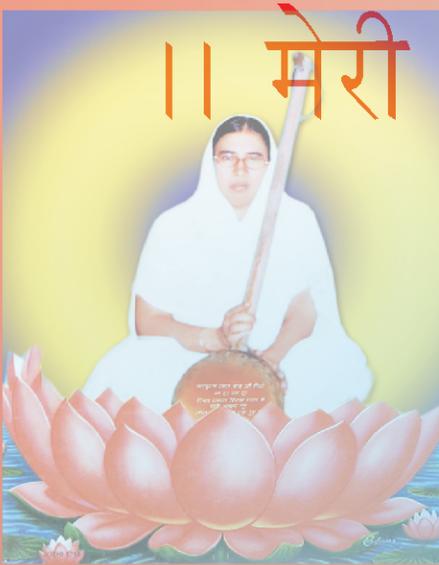


आच्छे दिन पाछे गए. हरि सक किया नहीं हेत ।
अब पछताए क्या होत है? जब चिडिया चुग गई खेत ॥

दादू दावा मत. बिन दावा दिन काट ।
बहुतक सौदा कर गए. इस पंसारी की हाट ॥

तो आप महापुरूषों को ज्ञान देने का मेरा प्रयोजन आप समझ गए होंगे और यदि मैं कही गलती पर हूं तो कृपया आप मेरा मार्गदर्शन करें। परन्तु बात बुद्धि के दर्जे की न हो अपितु अनुभव के आधार पर मार्गदर्शन की बात है। क्योंकि परमात्मा की लीला मनुष्य क्या समझेगा? उसकी महिमा ;ज्ञानद्ध अपरम्पार है। मनुष्य कवल अपना अनुभव ही बता सकता है।



॥ मेरी धार्मिक खोज मे से ॥